मनोज
कॉमिक्स
हवा के बेटे
राम-रहीम
Arjun n Ankur
present
CHAVAN STUDIO.

हवा के बेटे

लेखक:- बिमल चटर्जी.   चित्रांकन:-त्रिशूल कॉमिक्स आर्ट

मनोज कॉमिक्स के पिछले अंक 'अपने देश का गद्दार' में आपने पढ़ा, एक दिन राम को पड़ोसी देश में रहने वाले अपने घनिष्ठ मित्र रहीम का पत्र मिला, जिसमें रहीम ने उससे अपनी बहन के विवाह पर आने का आग्रह किया था। पड़ोसी देश के अन्दरूनी माहौल को देखकर पहले तो उसके पिता राघव ने राम को वहां पर जाने के लिये मना किया, लेकिन फिर उसे भेज दिया। राम रहीम और उसके मम्मी-डैडी से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ और रहीम की बहन की शादी की तैयारियों में उनका हाथ बंटाने लगा। लेकिन ठीक विवाह वाले दिन रहीम के पिता मेजर आसिफ को उनके ऑफिसर ब्रिगेडियर खान ने बुलाया और राम को कैद करने का आदेश दिया; ताकि राम द्वारा उसके पिता कर्नल राघव को ब्लैक मेल कर भारत की सीमा पर चल रहे एक गुप्त परीक्षण के विषय में जाना जा सके। मेजर आसिफ ने अपने ऑफिसर को तो हां कर दी, लेकिन घर पहुंचकर उन्होंने उसी समय राम और रहीम को तुरन्त भारत जाने के लिए आवश्यक तैयारी करने का आदेश दिया। डैडी की अनुपस्थिति में रहीम को ही अपनी बहन के विवाह के रस्मों-रिवाज पूरे करने पड़े थे और बारात भी विदा हो चुकी थी। इस लिये रहीम ने ज्यादा हील-हुज्जत नहीं की और राम के साथ सफर की तैयारी में जुट गया। आगे क्या होता है, यह प्रस्तुत कॉमिक्स में पढ़ें।-

Uploaded on RCFN

बेटा, जब मेरे ऑफिसर यह जानेंगे कि तुम उनके हाथों से निकल चुके हो तो वे हमारे साथ क्या सलूक करेंगे, यह तुम अच्छी तरह समझ सकते हो...

...हो सकता है, वे मेरी इस गद्दारी पर मुझे फांसी पर चढ़ा दें या गोली मार दें, लेकिन मुझे अपनी नहीं, बल्कि रहीम की चिन्ता है। मैं नहीं चाहता, मेरे किये का फल रहीम को भुगतना पड़े...

...इसीलिये मैं रहीम को तुम्हारे साथ भारत भेज रहा हूं। वहां यह सुरक्षित रहेगा और मुझे आशा है, तुम रहीम को अपने भाई के समान अपने साथ रखोगे।
इसकी आप बिल्कुल भी चिन्ता न कीजिये अंकल! रहीम भारत में बिल्कुल सुरक्षित रहेगा, लेकिन यदि आप लोग भी मेरे साथ भारत चलते तो ज्यादा अच्छा रहता। न जाने पीछे आप लोगों के साथ क्या बीते!

तुम हमारी चिन्ता न करो राम! बस, मेरी यही मनोकामना है कि तुम दोनों सकुशल भारत पहुंच जाओ। उसके बाद जो होगा, देखा जायेगा।
ओह!

तभी मेजर आसिफ की दृष्टि कार के बैक व्यू मिरर पर पड़ी।
ओह!
ओह, हमारा पीछा किया जा रहा है। शायद मेरे ऑफिसर को इस बात की भनक लग चुकी है कि मैं तुम्हें तुम्हारे देश वापस भेजने की कोशिश कर रहा हूं।

मेजर आसिफ ने तुरन्त कार की स्पीड बढ़ा दी, लेकिन जैसे ही उन्होंने एक मोड़ काटा –
या खुदा। सामने से भी हमें घेर लिया गया है।

राम-रहीम! बेटे, लगता है, हमें बुरी तरह फांस लिया गया है। प्रत्येक मार्ग पर सैनिक हमारा रास्ता रोके हुए हैं...
... अब तो तुम्हारे बच निकलने का एक ही मार्ग है कि तुम दोनों चलती कार से कूद जाओ।

लेकिन अंकल...
लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। जैसा मैं कहता हूं, वैसा ही करो। जल्दी।

ठीक है अंकल! जैसा आप कहते हैं, हम वैसा ही करते हैं। ईश्वर आपकी रक्षा करे।

और अगले ही पल–

रहीम, उन चट्टानों के पीछे चलो। जल्दी!
ठीक है!

दोनों पूरी शक्ति से पास ही खड़ी चट्टानों की ओर दौड़े..

... और किसी छलावे के समान पलक झपकते ही चट्टानों के पीछे पहुंच गये।
मुझे विश्वास है, हम पर किसी की दृष्टि नहीं पड़ी होगी।
लेकिन अब्बा...!
रहीम का गला भर आया।

उधर मेजर आसिफ कार को जैसे ही कुछ और आगे लेकर पहुंचे –
मेजर आसिफ, तुम चारों ओर से घिर चुके हो। अतः तुम्हारी भलाई इसी में है कि भाग निकलने का विचार त्याग कर अपने बेटे और राम के साथ चुपचाप कार से बाहर निकल आओ!

ओह ! तो आखिर मैं फंस ही गया। खैर, मुझे अपनी कोई चिन्ता नहीं। बस, खुदा बच्चों पर इनायत रखे।

भाग निकलने का कोई उपाय नहीं था। अतः मेजर आसिफ चुपचाप बाहर निकल आये, लेकिन बाहर निकलते ही उनकी दृष्टि सामने खड़े जिस व्यक्ति पर पड़ी, उसे देखकर वे बुरी तरह चौंक उठे।
उफ ! खुफिया जासूस फन्ने खां ! पाकिस्तान का खूंख्वार जल्लाद !

फन्ने खां पाकिस्तानी खुफिया विभाग का एक ऐसा काइयां एवं जालिम चीफ था, जिसकी बुद्धि एवं शक्ति पर पाकिस्तानी हुकूमत को गर्व था। जिसकी किसी भी बात को काटने की किसी में हिम्मत नहीं होती थी।
हा-हा-हा-! मानना पड़ेगा मेजर कि तुम समझदार हो। अब जरा अपने बेटे और उस मेहमान छोकरे को भी बाहर बुलाओ।
मैं कुछ समझा नहीं मि. फन्ने खां ! आखिर यह सब क्या चक्कर है ? मुझे क्यों घेरा गया है ?

मैंने तुम्हें ज्यादा समझदार बनने के लिये नहीं कहा है मेजर ! भलाई इसी में है कि तुम उन दोनों छोकरों को चुपचाप कार से बाहर निकलने के लिये कहो।

लेकिन मेरे साथ तो कोई भी नहीं है।
बकवास बंद करो मेजर...

...सैनिको, इसकी कार चेक करो और उन दोनों लड़कों को बाहर खींच लो। लेकिन सावधान रहना, कहीं वे कोई गलत हरकत न कर बैठें।
यस सर!

कुछ ही पलों बाद—
सर, कार में तो कोई नहीं है।
व्हाट?

सच-सच बताओ मेजर, तुमने अपने लड़के और उस हिन्दुस्तानी छोकरे को कहां भगा दिया है, वरना...।
मैं सच कह रहा हूं मि. फक्के खां! मेरे साथ कोई भी नहीं था। मैं तो किसी काम से एयरपोर्ट जा रहा था कि रास्ते में...

ठीक है। मैं आपकी बात को मान लेता हूं। अब आप यह बताइये कि आपका बेटा और उसका दोस्त इस समय कहां हैं?
वे घर पर ही होंगे।

यह गलत है। वे घर पर नहीं हैं।

फिर हो सकता है, मेरे घर से निकलने के बाद वे दोनों भी कहीं घूमने निकल गये हों।
आप फिर झूठ बोल रहे हैं मेजर! जो लोग आपके घर और आप पर निगरानी कर रहे थे, उनका स्पष्ट कहना है कि आप तीनों इसी कार पर और एक साथ रवाना हुए थे तथा जो सामान आप लोगों ने ले रखा था, उससे यह भी स्पष्ट होता था कि आप लोग किसी सफर की तैयारी में हैं।

क्या मतलब? मेरे घर पर निगरानी! लेकिन क्यों?

इसलिये कि ब्रिगेडियर खान को आप पर पहले से ही सन्देह हो गया था कि आप उनके आर्डर का पालन न करके उस छोकरे राम को यहां से भगा देंगे और शायद यही आप करने जा रहे थे।

यह झूठ है। अपने देश से गद्दारी करने का मुझ पर बेबुनियाद इल्जाम लगाया जा रहा है और यह सब शायद आपके ही कहने पर किया जा रहा है।
बस-बस मेजर, आप बहुत ज्यादा झूठ बोलने के साथ-साथ शानदार नाटक भी बहुत कर चुके...

... अब आपकी खैरियत इसी में है कि आप सच-सच बता दें कि पीछा किये जाने का पता चलते ही आपने उन्हें कहां ड्रॉप किया, वरना आप मुझसे अच्छी तरह परिचित हैं।
मैंने कहा ना कि मैं अपने बेटे और उसके दोस्त राम को घर पर ही छोड़कर आया था और...।

शटअप, यू बास्टर्ड!
तड़ाक्
आह!

सैनिको, इसे उस पेड़ के साथ बांध दो और इसकी तब तक पिटाई करो, जब तक यह या तो सच न उगल दे या फिर इसकी चीख-पुकार सुनकर वे दोनों छोकरे वहां न आ जायें।
राइट सर!

अगले ही पल—
मैं कहता हूं, छोड़ दो मुझे, वरना मैं ब्रिगेडियर खान से कहकर एक-एक का कोर्ट मार्शल करवा दूंगा।
जरूर—जरूर करवाना। हा-हा-हा!

शीघ्र ही मेजर आसिफ को उस पेड़ से बांध दिया गया और—
आह!
अब भी बता दो।

इधर चट्टान की आड़ से राम-रहीम यह सबकुछ अपनी आंखों से देख रहे थे।
उफ! यदि मैंने और देर की तो वे शैतान मेरे अब्बा को जान से मार देंगे। मुझे उन्हें छुड़ाने जाना ही होगा राम भइया!

ठहरो रहीम, ऐसा कदम उठाकर तुम मूर्खता करोगे। अपने अब्बा को छुड़ाने की बजाय तुम भी उनकी कैद में फंस जाओगे...

मुझे छोड़ दो राम भइया, तुम उस व्यक्ति को नहीं जानते। उसका नाम फन्ने खां है। हमारे देश का सबसे खूंख्वार जासूस। मैं उस शैतान के बारे में अब्बा के मुंह से बहुत कुछ सुन चुका हूं। यदि मैं सामने नहीं आया तो वे अब्बा को जान से मार डालेंगे...
...हमारे पास न कोई अस्त्र है, न कोई शस्त्र, जबकि वे सभी हथियारों से लैस हैं। जरा दिमाग से काम लो रहीम!

...तुम यहां से भाग जाओ राम भइया। मैं किसी तरह अपने अब्बा को छुड़ाने का प्रयास करूंगा, चाहे मेरे प्राण ही क्यों न चले जायें।
तुम गलत सोच रहे हो रहीम! उन्हें तुम्हारी या अंकल की जरूरत नहीं है, मेरी जरूरत है। जब तक मैं उन्हें नहीं मिलूंगा, वे न तुम्हें छोड़ेंगे, न तुम्हारे अब्बा को।

ओह! फिर हमें क्या करना चाहिये राम भइया! मैं अपनी आंखों के सामने अब्बा को इस तरह तड़प-तड़पकर मरते नहीं देख सकता!
हमें कुछ ऐसा करना होगा, जिससे सैनिक हम तक भी नहीं पहुंच पायें और अंकल भी उनकी गिरफ्त से छूट जायें। ठहरो, मुझे कुछ सोचने दो।

कुछ देर सोचने के बाद —
वाह! ध्यान आया रहीम! मेरे पास एक अस्त्र है। शायद वही हमारी इस समय कुछ मदद कर दे।
क्या है वह अस्त्र? जल्दी निकालो।

लो देखो, यह है वह अस्त्र।
गुलेल!

यह अस्त्र ज्यादा तो कुछ नहीं कर पायेगा, लेकिन कुछ देर के लिये उन सैनिकों को रोक अवश्य देगा...

...अब तुम चुपचाप इस गुलेल का चमत्कार देखो।

अगले ही पल-
ठक
उ-ई-ई
???

और शीघ्र ही राम द्वारा चलाये गये पत्थरों से मेजर आसिफ के आसपास खड़े सैनिकों की चीखें हवा में गूंजने लगीं।
ठक
उफ!
आह!
ठक
हाय!

और इससे पहले कि फन्ने खां कुछ समझ पाता, एक पत्थर उसकी खोपड़ी पर भी आकर लगा।
उई अम्मी! मर गया!
ठक

वाह राम भइया! तुमने तो कमाल कर दिया! यह अस्त्र तो हर प्रकार के शस्त्रों से कामयाब रहा!
कमाल तो तब होगा, जब अंकल उनकी कैद से आजाद हो जायेंगे!

उधर फन्ने खाँ को चोट तो सख्त आई थी, लेकिन उसने हौसला नहीं छोड़ा था।
जरूर यह कार्य उन्हीं छोकरों का होगा। वे शायद आसपास ही कहीं छिपे हैं।

अगले ही पल-
सैनिको, वे दोनों छोकरे आसपास ही कहीं छिपे हैं। तुरन्त चारों तरफ फैल जाओ और उनकी तलाश करो। ध्यान रहे, वे बचकर निकलने भी न पायें और मरने भी नहीं पायें। विशेषकर वह हिन्दुस्तानी छोकरा हमें जिन्दा चाहिये।

तुरन्त सारे सैनिक चारों ओर फैल गये और राम-रहीम की खोज करने लगे। तभी मेजर आसिफ भी चीख उठे-
राम-रहीम, मेरे बच्चो, यदि तुम मेरी आवाज सुन रहे हो तो सुनो। तुम जहां भी हो, तुरन्त यहां से निकल जाओ। मेरी चिन्ता छोड़ दो। अल्लाह ने चाहा तो हम शीघ्र ही मिलेंगे...
...खुदा के लिये भाग जाओ।

आसिफ की बात सुनकर कमांडो क्रोध से पागल हो उठा –
यू रास्कल! मैं तेरी बोटी-बोटी कुत्तों से नुचवा दूंगा देश के गद्दार!
तड़ाक
आह!

सुनो राम-रहीम! तुम दोनों जहां कहीं भी छिपे हो, तुरन्त सामने आ जाओ, वरना मेजर आसिफ को तड़पा-तड़पाकर मार दिया जायेगा।

या खुदा!

अब क्या होगा राम भइया! इधर सैनिक हमें खोज रहे हैं, उधर अब्बा अभी भी उनके चंगुल में फंसे पड़े हैं।
रहीम, फिलहाल तो एक ही मार्ग है कि हम पहले यहां से भागकर अपनी जान बचायें। आओ, भाग चलें।

क्या बकते हो? बुजदिल! उधर मेरे अब्बा के प्राण खतरे में पड़े हैं और तुम अपनी जान बचाने की सोच रहे हो! क्या यही है तुम्हारी दोस्ती? ऐसी बात कहते तुम्हें जरा भी लज्जा नहीं आई? थू है तुम्हारी दोस्ती पर!

मुझे गलत मत समझो रहीम! फिलहाल वक्त का तकाजा यही कहता है, लेकिन विश्वास रखो, जब तक मैं उनके कब्जे में नहीं आ जाता, वे तुम्हारे डैडी का कोई अहित नहीं करेंगे...

...इस बात को फन्ने खां भी अच्छी तरह से समझता होगा कि मुझ तक पहुंचने का उनके पास एक ही सूत्र है और वह सूत्र है अंकल और यदि उन्हें मार डाला गया तो शायद वह हमें कभी नहीं पा सकेगा...
...आओ निकल चलें! सैनिक यहां भी पहुंचते ही होंगे, और यदि हम एक बार उनके हाथ लग गये तो शायद न हम कभी उनकी कैद से निकल पायेंगे और न शायद तुम्हारे अब्बा ही...।

नहीं-नहीं राम भइया! आगे कुछ न कहो। मैं वह अशुभ बात सुन नहीं पाऊंगा!

तब देर न करो रहीम और यहां से निकल चलो। अंकल की जान बचाने का फिलहाल यही एक तरीका है।
ठीक है। यदि तुम्हारी यही मर्जी है तो आओ, निकल चलते हैं।

अगले ही पल दोनों पूरी शक्ति से एक तरफ दौड़ पड़े।
हौसला रखना रहीम! मुझे ईश्वर की सौगन्ध है, यदि मैंने उस कुत्ते फन्ने खां से तुम्हारे अब्बा के अपमान का बदला न लिया तो मैं आत्म हत्या कर लूंगा।
मुझे तुम पर पूरा विश्वास है राम भइया और अल्लाह भी हमारी मदद जरूर करेगा।

कैप्टन रहमान, आप तुरन्त उन दोनों लड़कों के बारे में हैडक्वार्टर को इत्तला कर दीजिये कि उन्हें शहर के और आसपास के इलाकों में सभी जगह तलाश किया जाये। साथ ही शहर से बाहर निकलने के तमाम मार्गों की नाकेबंदी कर दी जाये। वे शहर से किसी भी हालत में बाहर नहीं निकलने चाहिये!

राइट सर!

और मेजर अब्दुल, आप तुरन्त ही मिलिट्री फोर्स के कुछ चालाक गुप्तचरों को मेजर आसिफ और इसके दामाद के घर की निगरानी पर लगा दीजिये। मेरा मतलब तो आप समझ ही गये होंगे?
यस सर! आप जरा भी चिन्ता न करें। मैं मिलिट्री इंटेलिजेंस को अभी हिदायत देता हूं।

कमीने! कुत्ते! यदि तुमने मेरी बेटी या उसकी ससुराल वालों के साथ कोई भी बदतमीजी की तो मैं तुम्हारा खून पी जाऊंगा।

मेरा खून पीने से पहले तुम्हें अपने सगे-सम्बन्धियों का खून बहता देखना पड़ेगा मेजर! उसके बाद यदि तुम्हारे मुंह में जुबान रहे तो अपना यह अरमान भी पूरा कर लेना। हा-हा-हा!

सैनिको, ले चलो इसे हैडक्वार्टर में। इसकी बाकी खातिर-दारी हम वहीं करेंगे।

फिर शीघ्र ही सैनिक काफिला मेजर आसिफ को कैद में लेकर वहां से वापस लौट पड़ा।

उधर राम-रहीम बेतहाशा दौड़ते रहने के पश्चात् एक जंगल में जा पहुंचे।
इस जंगल में हम सुरक्षित तो हैं, लेकिन बिना भोजन-पानी के हम यहां ज्यादा दिनों तक रुक भी नहीं सकते।
हां, यह बात तो है, लेकिन इस जंगल में आश्रय न लेकर हम जायेंगे भी कहां?

रहीम, क्या तुम मुझे इस जंगल के आसपास की स्थिति के बारे में बता सकते हो?
हां, क्यों नहीं। इस जंगल के उत्तर की ओर शहर है, पूर्व की तरफ एक नदी है और...।
फिर रहीम राम को वह सारी जानकारी देने लगा, जो राम जानना चाहता था।

उधर जब फज्ले खां ने ब्रिगेडियर खान को जाकर सारी खबर दी तो वह गुस्से से पागल हो उठा।
क्या कह रहे हो? कैसे निकल भागा वह हिन्दुस्तानी छोकरा?
जनाब, इस मेजर के बच्चे ने सारा काम बिगाड़ दिया, वरना राम हमारे हाथ से कभी भी बचकर नहीं निकल सकता था।

मगर मैंने तो तुम्हें पहले से ही सावधान कर दिया था, फिर तुमसे ऐसी गलती कैसे हो गई...
...क्या तुम्हें नहीं मालूम कि राम हमारे लिये कितना महत्त्वपूर्ण है?

जनाब, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। वे इसी शहर में या जंगल के भीतर हैं। मेरे विभाग के तमाम आदमी, पुलिस व सैनिक चप्पे-चप्पे पर उनकी तलाश कर रहे हैं और मुझे विश्वास है कि वे शीघ्र ही पकड़ लिये जायेंगे।
मि. फज्ले खां, मुझे दोनों की नहीं, सिर्फ एक की जरूरत है और वह एक है, राम। और उसे कब्जे में करने के लिए तुम्हें चाहे कुछ भी क्यों न करना पड़े, तुम कर सकते हो। इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेषाधिकार पहले ही दिये जा चुके हैं...

...उस अधिकार के अन्तर्गत तुम देश के किसी भी सैनिक, पुलिस या गैर सरकारी फोर्स से सहायता ले सकते हो, लेकिन एक बात ध्यान रहे, राम मुझे सही-सलामत मिलना चाहिए। बेशक मेजर आसिफ के लड़के रहीम को गोली मार दो, उससे हमें कोई हमदर्दी नहीं। गद्दार बाप का बेटा गद्दार ही साबित होगा।
राइट सर! लेकिन इन मेजर साहब का क्या किया जाए?

इसे फिलहाल गुप्त कैद में डाल दो। जब तक राम नहीं मिल जाता, इसका जिन्दा रहना भी जरूरी है।
राइट सर!

और हां, इसके घर की निगरानी करना न भूलना! हो सकता है, राम-रहीम वहां पहुंचने की कोशिश करें।
उसकी आप चिन्ता न करें जनाब! यह प्रबन्ध मैं पहले ही कर चुका हूं।

हां जनाब! एक बात और, क्या आपके पास राम का कोई फोटो ग्राफ है?
राम की फोटो! ओह हां, मेरे पास उसकी एक फोटो है। हमारे जासूसों ने उसके यहां पहुंचते ही एहतियात के तौर पर उसकी फोटो ले ली थी, क्योंकि आजकल भारत से आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है।

कहकर ब्रिगेडियर खान ने अपनी दराज खोली और राम की फोटो निकालकर फज्ले खां की ओर बढ़ा दी।
लेकिन इस फोटो का तुम क्या करोगे?
कल के तमाम अखबारों में इस फोटो के साथ एक महत्त्वपूर्ण खबर छपेगी कि यह लड़का नवाब इमाउद्दीन के यहां से लाखों रुपये की नकदी व आभूषण चुराकर ले भागा है। इसके विषय में सूचना देने वाले को एक लाख रुपये नकद इनाम दिया जायेगा।

बहुत खूब! तुम्हारी योजना काफी अच्छी है। इस तरीके से यह जल्दी पकड़ा जा सकेगा। अब तुम जाओ और अपने काम में जुट जाओ, लेकिन ध्यान रहे, हमारी योजना के बारे में आम लोगों को भनक तक नहीं पड़नी चाहिये, वरना हमारे सारे किये-कराये पर पानी फिर जायेगा।
आप निश्चिन्त रहें सर! ऐसा ही होगा। अच्छा, मैं चलता हूं।
उसके बाद फज्ले खां मेजर आसिफ और सैनिकों के साथ वहां से निकल गया।

कुछ देर बाद मेजर आसिफ को एक इमारत में गुप्त रूप से कैद कर दिया गया।
जब तक राम-रहीम का पता नहीं चल जाता, तुम यहीं कैद रहोगे मेजर! उसके बाद तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारी आत्मा को भी तुम्हारे शरीर से आजाद कर दिया जायेगा। हा-हा-हा!

इधर राम-रहीम रात को जंगल से निकलकर छुपते-छुपाते एक ऐसी खण्डहरनुमा इमारत में आ पहुंचे, जो शहर के बाहर स्थित थी और वर्षों से वीरान पड़ी थी।

यह स्थान सुरक्षित लगता है। अतः आज की रात यहीं बितानी उचित रहेगी।

ठीक कहते हो। इसके अलावा कोई चारा भी तो नहीं है।
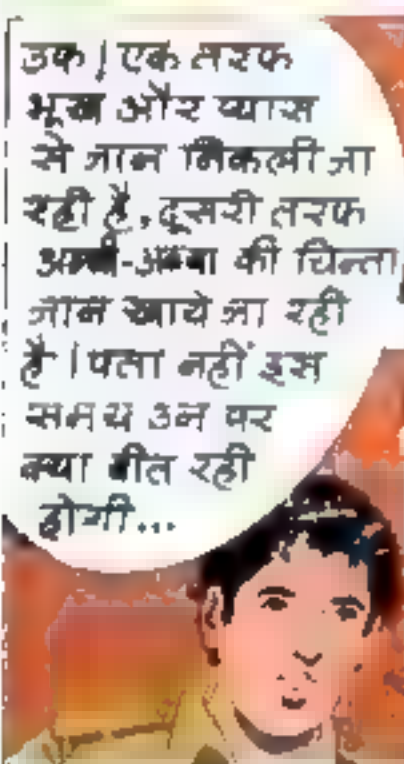
उफ! एक तरफ भूख और प्यास से जान निकली जा रही है, दूसरी तरफ अम्मी-अब्बा की चिन्ता जान खाये जा रही है। पता नहीं इस समय उन पर क्या बीत रही होगी...

...सच राम भइया, तुम नहीं जानते, फन्ने खां कितना खतरनाक इंसान है! वह मेरे अब्बा पर किसी भी तरह का रहम नहीं करेगा। पता नहीं, वह शैतान उन्हें कैसी-कैसी यातनायें दे। मुझे तो डर है कि कहीं वह अम्मी को भी हिरासत में न ले ले।

चिन्ता मत करो रहीम! भगवान् जो करेगा, अच्छा ही करेगा। तुम जरा हिम्मत से काम लो, फिर देखो मेरा कमाल।

मगर तुम अकेले क्या करोगे? एक तरफ पूरी सरकार है, दूसरी तरफ सिर्फ तुम। कैसे मुकाबला कर पाओगे तुम सरकारी ताकत से?
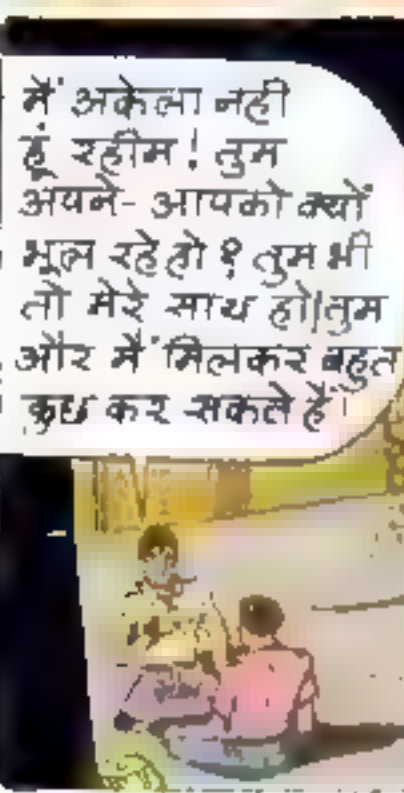
मैं अकेला नहीं हूं रहीम! तुम अपने-आपको क्यों भूल रहे हो? तुम भी तो मेरे साथ हो। तुम और मैं मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं।

वह तो ठीक है राम भइया, लेकिन कुछ तो तभी कर सकेंगे न, जब हम यहां से बाहर निकलेंगे। मुझे तो यहां से बाहर निकलने की ही कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही है। निकलते ही हम पकड़ लिये जायेंगे...

...मुझे विश्वास है कि पुलिस और सरकारी जासूस इस शहर के साथ-साथ आसपास के क्षेत्र में भी हमारी तलाश कर रहे होंगे और उन्होंने शहर से बाहर जाने वाले तमाम रास्तों की भी नाकेबंदी कर दी होगी। ऐसे में भला हम क्या कर सकेंगे?

...लेकिन सबसे पहले हमें जासूसों और पुलिस की निगाहों से बचने के लिये वेश बदलना होगा।
तुम्हारे कहने का मतलब है कि मेकअप करना होगा?
बिल्कुल।

लेकिन तुम मेकअप का सामान कहां से लाओगे? न तो हमारे पास पैसा ही है और न आसपास कोई दुकान।
तुम इस शहर के रास्तों और दुकानों से परिचित तो हो ना।

हां, लेकिन जिस दुकान में मेकअप करने का सामान मिलता है, वह तो यहां से दो-तीन मील दूर है।
ओह!

क्या सोचने लगे तुम?
यही सोच रहा था कि इतनी दूर पुलिस की नजरों से छुपकर पैदल कैसे जाया जा सकेगा? और, तुम चिन्ता न करो। मैं कोई-न-कोई उपाय कर ही लूंगा।
फिर...

...राम चल पड़ा।
यह तुम अचानक कहां चल पड़े?
तुम यहीं बैठो, मैं जरा इस इमारत का निरीक्षण करके आता हूं, क्योंकि हो सकता है, कुछ दिन हमें यहीं बिताने पड़ें।

और रहीम को वहीं छोड़ राम उस खण्डहर हो रही इमारत का निरीक्षण करने में जुट गया।

निरीक्षण करते-करते—
ओह! यह सीढ़ियां शायद छत तक जाती हैं। चलो, छत की हालत भी देख आता हूं।

और राम सावधानी के साथ उन जर्जर हो रही सीढ़ियों पर चढ़ने लगा।
काफी खस्ता हालत है इन सीढ़ियों की। कहीं मेरे बोझ से टूट ही न जाएं।

लेकिन राम सुरक्षित छत पर पहुंचने में सफल हो गया।
आसपास मकान तो नहीं, लेकिन वह पक्की सड़क जरूर है। और शायद वह सड़क शहर के भीतर जाती है। रहीम की बताई दुकान तक पहुंचने के लिये शायद मुझे इसी सड़क का इस्तेमाल करना होगा।

अचानक राम उस सड़क पर दूर एक काले धब्बे को देखकर चौंक उठा-
ओह! जरूर वह कोई कार है और इसी तरफ आ रही है।

यदि वह कार किसी तरह हमारे हाथ लग जाये तो हमारी सारी परेशानी इसी समय दूर हो सकती है।

तभी एक विचार उसके दिमाग में आया और वह तेजी से सीढ़ियां उतरने लगा।

क्या हुआ राम भइया! तुम इस तरह दौड़ते हुए क्यों आ रहे हो? खैरियत तो है ना?

घबराओ नहीं, कोई खतरा नहीं है, बल्कि एक सुनहरा मौका हाथ आने वाला है। ठहरो, जरा पहले मैं अपनी गुलेल निकाल लूं, फिर तुम्हें सबकुछ बताऊंगा।

आखिर क्या चक्कर हो सकता है?

आओ मेरे साथ। हमें तुरन्त पास वाली सड़क पर पहुंचना है।
लेकिन क्यों?

एक कार शहर की ओर जा रही है और वह यहीं से गुजरेगी! हमें किसी भी तरह उस कार को अपने कब्जे में करना है।
ओह!

पलक झपकते ही दोनों सड़क पर पहुंच गये। कार अभी भी काफी दूर थी।
तुम तुरन्त सड़क पर लेट जाओ और तुम्हें ऐसा दर्शाना है, जैसे तुम मर चुके हो या घायल अवस्था में बेहोश हो।
मैं तुम्हारी योजना समझ गया राम भइया! अब जरा भी चिन्ता न करो।

उसके बाद रहीम ने सड़क के बीचो-बीच लेटने में जरा भी देर नहीं लगाई और राम गुलेल संभालकर पास की ही झाड़ियों में दुबक गया।

शीघ्र ही-
अरे, यह सड़क के बीचो-बीच कौन पड़ा है?
खुदा जाने कौन है। शायद घायल है। तुम बैठो, मैं देखता हूं।

लेकिन वह व्यक्ति जैसे ही कार से नीचे उतरा-
ठक
आह!

अरे, क्या हुआ उन्हें? वे गिर कैसे गये?

परन्तु जैसे ही वह उतरी—
आ—ई—ई—ई—!
हुक

स्त्री-पुरुष दोनों के बेहोश होकर गिरते ही न केवल राम झाड़ियों से निकलकर सड़क पर पहुंच गया, बल्कि रहीम भी उछलकर खड़ा हो गया।
रहीम, इन दोनों को जल्दी से उठाकर कार में ठूंसो, वरना कोई आ गया तो बेकार में मुसीबत खड़ी हो जायेगी।
ठीक है।

फिर दोनों ने मिलकर बारी-बारी से मर्द और औरत को उठाकर...
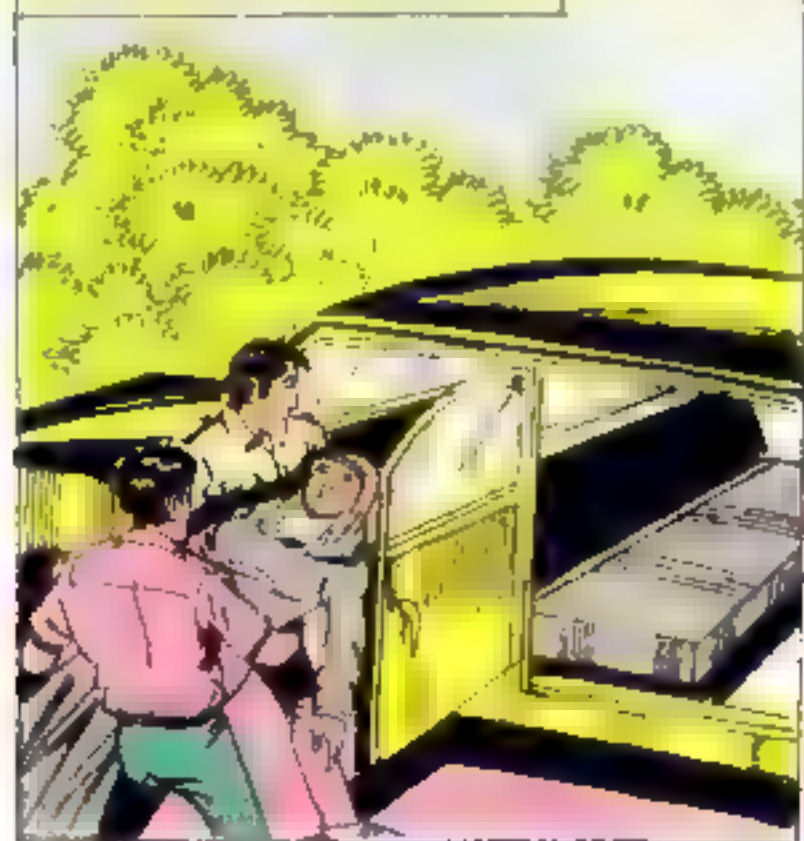
...कार की पिछली सीट के नीचे डाल दिया और ऊपर से उन पर एक चादर, जो वहीं पड़ी थी, ढक दी।
अब?
तुम जल्दी से औरत का बुर्का पहन लो। हम इसी समय शहर चलेंगे और जरूरत का सारा सामान ले आयेंगे।
लेकिन कैसे?

इस आदमी का पर्स और औरत का हैंड बैग हमारे काम आयेगा। ठहरो, मैं इनकी तलाशी लेता हूं।

तलाशी लेने पर मर्द और औरत का पर्स मिल गया, जिसमें काफी रुपये थे।
वाह! बन गया काम। इतने रुपये तो हमें महीने भर के लिये काफी हैं।
बेशक...

...लेकिन अब तुम देर न करके जल्दी से औरत का बुर्का पहन लो और ड्राइविंग सीट पर पहुंच आओ। चूंकि तुम यहां के मार्गों से परिचित हो, इसलिये ड्राइविंग तुम्हें ही करनी है और मेकअप व जरूरत के अन्य सामान की खरीदारी भी तुम्हें ही करनी है।
ठीक है।

फिर रहीम ने औरत का बुर्का पहनने और ड्राइविंग सीट पर पहुंचने में कोई ज्यादा देर नहीं लगाई।
पहले गाड़ी को उस दुकान पर ले चलो, जहां मेकअप का सामान मिलता है, उसके बाद दूसरी खरीदारी करेंगे।
अभी लो राम भइया!

अगले ही पल रहीम ने कार बाजार की ओर दौड़ा दी।
राम भइया, मेकअप और खाने-पीने के सामान के अलावा मुझे क्या-क्या खरीदना होगा?
एक जोड़ी पुरुष और स्त्री के कपड़े व जूते, एक छड़ी...।
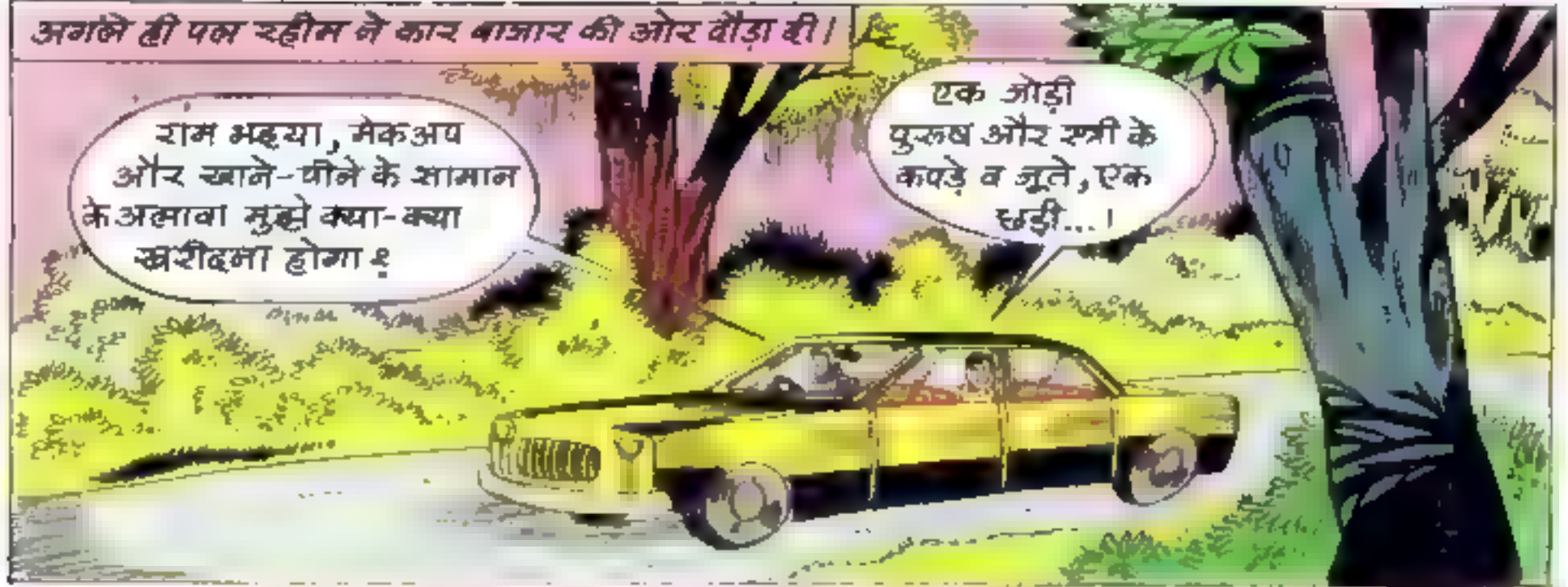
फिर राम ने जिन-जिन वस्तुओं की खरीदारी करनी थी, वह एक-एक कर रहीम को बता दीं और कार की सीट पर लेट गया।
सारा सामान खरीदकर हमें वापस उसी खण्डहर में लौटना है ना?
बिल्कुल!
फिर इन औरत-मर्द तथा इनकी कार का क्या करेंगे?
यह वापस लौटकर ही सोचेंगे।
उसके बाद रहीम ने कोई प्रश्न नहीं किया।
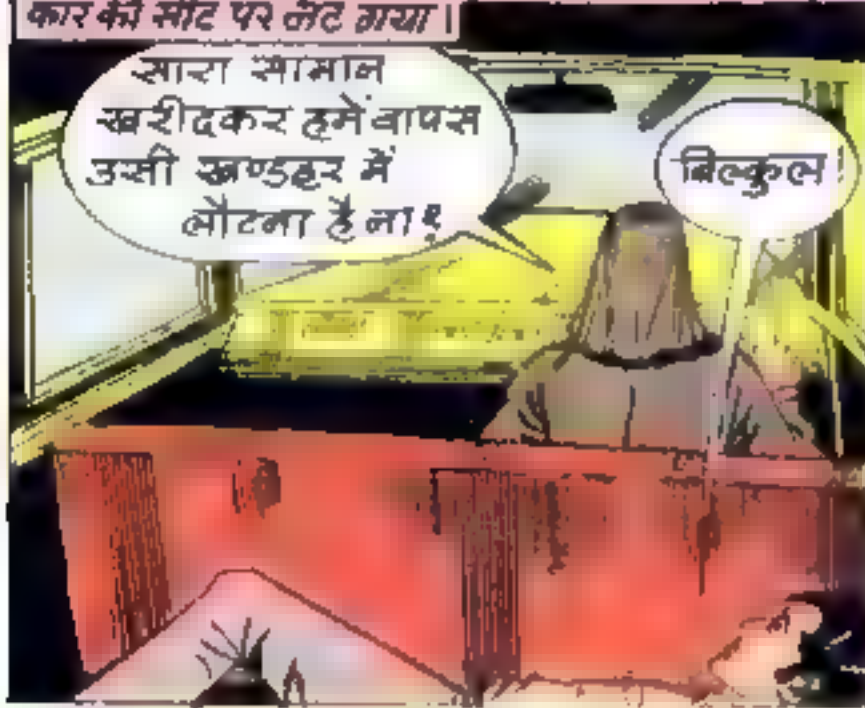
लगभग बीस-पच्चीस मिनट बाद वे बाजार में पहुंच गये। राम ने रुपये पहले ही रहीम को सौंप दिये थे। अतः रहीम कार को एक जगह खड़ी करने के पश्चात् बाजार से मेकअप व जरूरत का अन्य सामान खरीदने लगा।

खरीदारी पूरी करने के पश्चात् रहीम वापस कार की ओर चल पड़ा।

पता नहीं राम इन सब वस्तुओं का क्या करेगा? सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात तो यह है कि उसने मेरी नाप के जनाने कपड़े व बाल क्यों मंगाये हैं?

जल्दी ही रहीम ने कार उसी इमारत के पिछवाड़े ले जाकर रोक दी।
अब तुम इन दोनों का क्या करोगे राम भइया! क्या इन्हें भी इमारत के भीतर ले चलें?
नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं! हम इनके हाथ-पैर बांधकर इन्हें यहीं छोड़ देंगे। फिलहाल तो ये अभी बेहोश ही हैं, अतः खतरे की कोई बात नहीं।
ठीक है।

फिर राम-रहीम ने मिलकर रस्सी से स्त्री-पुरुष दोनों के हाथ-पैर जकड़े...

...और खरीदा हुआ सारा सामान कार से निकालकर इमारत के भीतर पहुंच गये।
शुक्र है, अब तक किसी किस्म की गड़बड़ नहीं हुई। सारा काम आसानी से हो गया।

लेकिन राम भइया, यदि खाना खाने में मुझे अब और इन्तजार करना पड़ा तो तुम्हारे लिये जरूर एक बहुत बड़ी गड़बड़ हो जायेगी।
ओह! मैं तो भूल ही गया था कि तुम बहुत भूखे हो। चलो, खाने का पैकेट निकालो। पहले पेट में कूद रहे चूहों से निपटते हैं। उसके बाद दूसरे काम के विषय में सोचेंगे।

और दोनों भोजन का पैकेट निकाल भोजन करने में जुट गये।

भोजन करने के पश्चात्–
रहीम भाई, अब तुम जरा कष्ट कर मेकअप का सामान और शीशा निकालो। मैं इसी समय अपना और तुम्हारा मेकअप करके फारिग हो जाना चाहता हूं।
ठीक है!

रहीम ने मेकअप के सामान के साथ-साथ शीशा भी निकालकर राम के सामने रख दिया और राम सर्वप्रथम अपना मेकअप करने में जुट गया।
वास्तव में राम भइया सर्वगुण सम्पन्न हैं। ऐसे मित्र पर तो किसी को भी नाज हो सकता है। जितना यह तेज दिमाग रखता है, उतनी ही हिम्मत भी है इसमें।

चूंकि राम स्वस्थ शरीर का लड़का था, इसलिये उसने अपने चेहरे पर एक मुसलमान नौजवान का मेकअप किया, जिसे देखकर रहीम चमत्कृत-सा हो उठा।
क्यों, कैसा है मेरा मेकअप रहीम!
कसम खुदा की राम भइया, मुझे तो अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा कि तुम राम ही हो। इस रूप में तुम्हें कोई पहचान नहीं पायेगा।

गुड ! तुम मेरे लिये घड़ी और अचकन-पाजामा लाये हो ना?
हां।
तो निकालो उन्हें। लगे हाथ मैं कपड़े भी बदल डालूं।

रहीम ने राम के नाप के कपड़े और घड़ी उसे दे दिये और जब राम कपड़े बदलकर रहीम के सामने आया-
वाह राम भइया ! इस वेश में तो तुम किसी रईस के शहजादे से कम नहीं मालूम पड़ रहे। मैं मान गया तुम्हारी कलाकारी को।
तो आओ, अब मैं तुम्हारा भी मेकअप कर दूं।

और राम-रहीम के चेहरे पर मेकअप करने में जुट गया।

और जब वह रहीम का मेकअप करके हटा।
या अल्लाह, यह मैं हरगिज नहीं हो सकता। यह तो किसी खूबसूरत लड़की का चेहरा है।

तुम ठीक कहते हो, क्योंकि अब तुम मेरी पत्नी हो।
व्हाट? पत्नी!

हां, मैं तुम्हारा मर्द हूं और तुम मेरी नई-नवेली दुल्हन। चलो, अब तुम दुल्हन का जोड़ा भी पहन लो, जो तुम बाजार से खरीदकर लाये हो।
ओह, अब समझा कि राम ने जनाने कपड़े और बाल आदि क्यों मंगवाये थे।

लेकिन रहीम ने ज्यादा बहस न करके जनाने कपड़े पहन लिये और वह वास्तव में एक खूबसूरत दुल्हन दिखाई देने लगा।
वाह ! तुम मेरी पत्नी के रूप में खूब जंच रहे हो। कोई भी तुम पर फिदा हो सकता है। हा-हा-हा-!
धत्!

सुनो रहीम, अब से तुम्हारा नाम जरीना बेगम है और मैं तुम्हारा शौहर अली मोहम्मद। हमारी शादी हाल ही में हुई है और हम लाहौर से यहां घूमने आये हैं। समझ गये न?
जी, बिल्कुल समझ गई आपकी यह कनीज!
रहीम ने जनानी आवाज में कहा और फिर दोनों ठहाका मारकर हंस पड़े।

लो, यह बुर्का भी पहन लो, ताकि रही-सही कमी भी पूरी हो जाये।
सचमुच राम भइया, जवाब नहीं तुम्हारा। अब मुझे विश्वास हो गया कि हम पाकिस्तानी हुकूमत से पूरी टक्कर ले सकते हैं। अब्बा को उनके कब्जे से आजाद करा सकते हैं।

रहीम ने बुर्का पहन लिया।
इस समय ठीक तीन बजे हैं, यानी रात होने में कम-से-कम पांच घण्टे शेष हैं...

... रहीम, हम जो कुछ भी करेंगे, रात के समय करेंगे। इस बीच तुम चाहो तो आराम कर सकते हो। मैं जरा आसपास का राउंड लगाकर आता हूं।

- हवा के बेटे राम-रहीम की कैद से भागकर उस दम्पत्ति ने क्या किया?
- क्या राम-रहीम पकड़े जा सके?
- मेजर आसिफ और उनकी पत्नी का क्या हुआ? क्या राम-रहीम उन्हें छुड़ा सके?
- क्या राम-रहीम ने जो वेश बदला था, उससे वे पाकिस्तानी हुकूमत की आंखों में धूल झोंक सके?
- क्या कर्नल राघव को पाकिस्तान में उनके प्रति चल रहे षड्यन्त्र का पता चल सका?
- इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये मनोज कॉमिक्स के आगामी अंक में पढ़ें:–

"बम के गोले"